भक्ति संहिता

BHAKTI SAMHITA · SACRED SCRIPTURES

श्री गणेश जी

गणेश चालीसा

GANESH CHALISA

॥ श्री श्री गणेश जी की कृपा से ॥

भक्ति संहिता

गणेश चालीसा

GANESH CHALISA

॥ दोहा ॥

जय गणपति सदगुण सदन, कविवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

॥ चौपाई ॥

01 जय जय जय गणपति गणराजू।
मंगल भरण करण शुभ काजू॥

02 जय गजबदन सदन सुखदाता।
विश्व विनायक बुद्धि विधाता॥

03 वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावन।
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥

🌺 जय गणेश 🌺

04 राजत मणि मुक्तन उर माला।
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥

05 पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।
मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥

06 सुन्दर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित॥

07 धनि शिव सुवन षडानन भ्राता।
गौरी लालन विश्व-विख्याता॥

08 ऋद्धि सिद्धि तव चँवर सुधारे।
मूषक वाहन सोहत द्वारे॥

विघ्नहर्ता

09 कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।
अति शुची पावन मंगलकारी॥

10 एक समय गिरिराज कुमारी।
पुत्र हेतु तप कीन्ह भारी॥

11 भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।
तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥

12 अतिथि जानि कैं गौरि सुखारी।
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी॥

13 अति प्रसन्न ह्वै तुम वर दीन्ह।
मातु पुत्र हित जो तप कीन्ह॥

14 मिलही पुत्र तुहि बुद्धि विशाला।
बिना गर्भ धारण यहि काला॥

15 गणनायक गुण ज्ञान निधाना।
पूजित प्रथम रूप भगवाना॥

16 अस कहि अन्तर्धान रूप ह्वै।
पल में गणपति तहाँ प्रगट भयऊ॥

17 अति अद्भुत रूप सोहि देखा।
गौरी मन जाहि गयऊ रेखा॥

18 हर्षित ह्वै गौरी पुत्र रूप निहारा।
नयन भरे अश्रु मन हर्षाया॥

जय गणपति

19 सतयुग त्रेता द्वापर काला।
नाम ले तुम्हारो मिटे जंजाला॥

20 पूजन रचाय धर्म अनुसारा।
सब विघ्नों का तुम करो निवारा॥

21 कलियुग में नाम तुम्हारा।
सहसगुण फल मिलत न्यारा॥

22 श्री गणेश यही नाम तुम्हारा।
अति सुन्दर लागत मन प्यारा॥

23 सुन्दर रूप मनोहर धारी।
मात-पिता तुम पर बलिहारी॥

24 तुम्हारी महिमा पार न पाई।
जो जन सुमिरत चित्त लगाई॥

25 शिव-सुवन षडानन के भ्राता।
जगत जनों के सुख के दाता॥

26 विद्यावारिधि बुद्धि के दाता।
धन-धान्य देत हो विख्याता॥

27 मूषक वाहन पर तुम राजत।
सुर-नर मुनि सब दर्शन पाजत॥

28 कबहुँ न तुमने भक्त भुलाया।
सदा ही उनको हाथ बँधाया॥

विघ्नविनाशक

29 भक्त कार्य सब सिद्ध कराते।
जो तुमको सुमिरत मन लाते॥

30 और देव को नहिं धरत ध्याना।
जो गणेश का जपत हो नामा॥

31 सब कामना पूर्ण हो जाती।
जब कृपा तुम्हारी होती साथी॥

32 संकट काटे विघ्न हरो।
जो ध्यावे तुम सुमिरे सुखी करो॥

33 पूजन करे जो श्रद्धा लाई।
सबही सिद्धि मनोरथ पाई॥

34 शुभ लाभ लिखत दाहिने पासा।
भक्तजनों की पूरण आसा॥

35 जो गणेश चालीसा नित गावे।
बसी इच्छा मन की वो पावे॥

36 सेवक स्तुति करे हर्षाई।
ऋद्धि-सिद्धि घर आवत भाई॥

37 विद्यार्थी जो पाठ करत है।
ज्ञान पाय परीक्षा जीतत है॥

38 व्यापारी जो नाम रटत है।
लक्ष्मी आवे द्वार खटत है॥

ॐ गं गणपतये नमः

39 और जो यह चालीसा गावे।
छूट बन्धन सुख परम पावे॥

40 सुमिरन करे गणेश का नित्य।
हरे दुःख बाधा अनित्य॥

॥ दोहा ॥

जो यह गणेश चालीसा पढ़े, ध्यान धरे मन माहि।
सकल सिद्धि संपत्ति मिलें, सुख-दुख रहें नाहिं॥

॥ जय गणेश — ॐ गं गणपतये नमः ॥

🌺 **फल:** गणेश चालीसा का पाठ प्रतिदिन प्रातःकाल करने से सभी विघ्न दूर होते हैं, बुद्धि और विद्या की प्राप्ति होती है, कार्यों में सफलता मिलती है। कोई भी शुभ कार्य आरंभ करने से पहले गणपति का स्मरण अवश्य करें।